"काव्य गुण"

भारतीय काव्यशास्त्र में आचार्य वामन ने काव्य के आत्मतत्व के रूप में 'रीति' को प्रतिष्ठा दिया है। सर्वप्रथम आचार्य वामन ने ही 'रीति' को भौगोलिकता से मुक्त करके गुणों से अनुशासित किया है। रीति को परिभाषित करते हुए वे लिखते हैं:—

"विशिष्ट पद रचना रीतिः विशेषो गुणात्मा।"

आचार्य वामन काव्यगुण को सौन्दर्य तत्त्व का मूल कारण मानते हैं। वे गुणों का सम्बन्ध शब्द और अर्थ दोनों से दर्शाते हैं। रीति अगर काव्य की आत्मा है तो गुण रीति की आत्मा है। आचार्य भरतमुनि काव्यगुणों की संख्या दस मानते हैं, इनके मतानुसार —

"श्लेषः प्रसादः समता, समाधि माधुर्यमोजः पदसौकुमार्यम्
अर्थस्य च व्यक्तिरुदारता च कान्तिश्च काव्यस्य गुणादशैते॥"

भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में काव्य गुणों का स्पष्ट एवं वैज्ञानिक वर्णन आचार्य वामन ने ही किया है। आचार्य वामन के अनुसार काव्यगुण के दस भेद हैं —

"ओजः प्रसादश्लेषसमतासमाधिमाधुर्य
सौकुमार्योदारतार्थव्यक्ति कान्तयो गुणः।"

भारतीय काव्यशास्त्र में जिन दस काव्य गुणों की आचार्यों ने चर्चा की है, वे इस प्रकार हैं— 1. माधुर्य, 2. ओज, 3. प्रसाद, 4. श्लेष, 5. समता, 6. सुकुमारता, 7. अभिव्यक्ति, 8. उदारता, 9. कान्ति और 10. समाधि।

1. माधुर्य —

आचार्य भरतमुनि के अनुसार काव्य का सौन्दर्य श्रुतिमधुरता में है। अतः जिस काव्य गुण से हृदय आनन्द से आप्लावित होता है, वही माधुर्य गुण है। आचार्य वामन के अनुसार — 'पृथक् पदत्वं माधुर्यम्।' अर्थात् रचनागत पदों की पृथकता ही माधुर्य है। माधुर्य का अभिप्राय रसमयता से है। चिन्तामणि के अनुसार — "माधुर्य काव्य का वह गुण है, जिससे काव्य में श्रुतिसुखदा, आर्द्रता, भावमयता और आह्लादकता आती है। उदाहरणार्थ —

"तुमुल कोलाहल कलह में,
मैं हृदय की बात रे मन।
विकल होकर नित्य चंचल
खोजती जब नींद के पल
चेतना थक-सी रही तब
मैं मलय की बात रे मन।" (कामायनी)

2. ओज —

ओज का शाब्दिक अर्थ — तेज, प्रताप, एवं दीप्ति से है। जिस काव्य को सुनकर हृदय में उत्साह, वीरता, आवेग जैसे भाव जाग्रत हो जाते हैं, ऐसे काव्य को ओजपूर्ण काव्य कहते हैं। आचार्य वामन के अनुसार रचना का गाढ़त्व ओजगुण है — "गाढबन्धत्वमोज" और यह गाढ़त्व अक्षरों की संश्लिष्टता, संयुक्ताक्षरों के संयोग से उत्पन्न होता है, जैसे —

"शत घूर्णावर्त, तरंग-भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पहाड़।
(राम की शक्ति पूजा — निराला)

Date ____
Page ____

तोड़ता बन्ध - प्रतिसन्ध धरा, हो स्फीत वक्ष,
दिग्विजय - अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष ।।"

3. प्रसाद —
'प्रसाद' का शाब्दिक अर्थ है 'प्रसन्नता'। इस गुण के लिए स्वच्छता, सरलता और सहज ग्राह्यता अत्यन्त आवश्यक है। यह ऐसा काव्य गुण है, जो सामाजिक के हृदय में भाव अथवा कार्य को शीघ्र व्याप्त कर देता है। उदाहरण स्वरूप केदारनाथ अग्रवाल के इस गीत को देखा जा सकता है —

"माझी ! न बजाओ बंशी मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता है जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे पल-पल डोलता।"

4. श्लेष —
इसका शाब्दिक अर्थ है - अनेक शब्दों, अर्थों या अक्षरों का एक में संघटन होना। आचार्य दण्डी ने रचना के सघन संघटन को श्लेष कहा है। जबकि आचार्य वामन सघन संघटन को ओज का गुण मानते हैं — "मसृणत्वं श्लेषः।" अर्थात शब्दनिष्ठ मसृणता ही श्लेष है। श्लेष गुण और श्लेष अलंकार में अन्तर है। जैसे —

"तुम प्राण और मैं काया
तुम शुद्ध सच्चिदानंद ब्रह्म
मैं मनमोहिनी माया।" (तुम और मैं - निराला)

5. समता —
समता का अर्थ है समान अर्थात एक जैसा भाव। समता काव्य गुण ऐसे दो काव्य में मिलता है, जहाँ भाव सामासिकता, कठिनता और

निरर्थकता (व्यर्थता) के व्यूह में फँसकर सम्प्रेषण में बाधक नहीं बनते हैं। सहज, सरल, स्वाभाविक एकरस अभिव्यक्ति इस गुण का लक्षण है। आचार्य दण्डी के अनुसार, "बन्धों या रचनाओं की एकरूपता का गुण ही समता है।" आचार्य वामन के अनुसार "रचना शैली का अभेद ही समता है।" "मार्गाभेद: समता" अर्थात् जिस शैली से रचना आरम्भ की जाती है और उसका पर्यवसान भी उसी शैली में होता है तो वह समता गुण है। उदाहरणार्थ —

"कितना चौड़ा पाट नदी का, कितनी भारी शाम
कितने खोये-खोये से हम, कितना तट निष्काम।"
(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)

6. सुकुमारता —

सुकुमारता का अर्थ है- कोमलता। कोमल वर्णों की योजना जिस रचना में हो तथा साथ ही साथ सुकुमार भावों की व्यंजना भी हो, तब वहाँ सुकुमार गुण होता है। आचार्य दण्डी के अनुसार, "अपरुष वर्णों की योजना में सुकुमारता होती है।" हिन्दी के आचार्य भी इसे स्वतंत्र गुण नहीं मानते हैं। छायावादी कवियों के काव्यों में इस गुण का खूब प्रयोग हुआ है, जैसे —

"सैकत शय्या पर दुग्ध धवल तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल
लेटी है श्रान्त क्लान्त निश्चल।" (पंत - नौका विहार)

7. अर्थअभिव्यक्ति —

इस गुण का अभिप्राय अर्थ प्रकाशन से है। शब्दों अथवा पदों द्वारा समग्र अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति को आचार्य भरतमुनि ने अर्थव्यक्ति गुण कहा है। आचार्य दण्डी के अनुसार, "जिन पदों से अर्थ

अभिप्रेत अर्थ से अन्यत्र न जाय वहाँ अर्थव्यक्ति गुण होता है।" आचार्य वामन के अनुसार, "अर्थ की स्पष्ट प्रतीति का हेतु अर्थव्यक्ति गुण है।" उदाहरणार्थ-

"स्नेह-निर्झर बह गया है
रेत ज्यों तन रह गया है।" (निराला)

6. उदारता —

इस गुण से काव्य में प्रतिपाद्य अर्थ में उत्कर्ष की प्रतीति होती है। उदारता के अनेक अर्थ माने जाते हैं, जैसे- व्यापकता, उत्कर्ष, प्रभावात्मकता और असंकीर्णता आदि। आचार्य वामन के मतानुसार, "विकटत्वमुदारता" अर्थात् रचना की विकटता ही उदारता है। उदाहरणार्थ—

"लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षःस्थल पर
शत-शत फेनोच्छ्वसित, स्फीत फूत्कार भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अम्बर।"

7. कान्ति —

कान्ति का अभिप्राय आभा, कमनीयता से है। आचार्य भरतमुनि के अनुसार, "कान्ति ऐसा गुण है, जिसके अन्तर्गत श्रुति-मधुर तथा चित्ताकर्षक क्रीड़ाशीलता का वर्णन हो।" देव और भिखारीदास के अनुसार "ऐसे रुचिर वचन जिनका अर्थ गूढ़ होकर प्रकट हो अपितु सुमति-जनों की समझ में आये वह कान्ति गुण है।" उदाहरणार्थ —

"नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ वन बीच गुलाबी रंग।" (कामायनी - प्रसाद)

10. समाधि —

इसका शाब्दिक अर्थ है — सम्यक् आध्यान। अर्थात् एक वस्तु के धर्म का दूसरी पर आरोपण है। आचार्य दण्डी के अनुसार, "जहाँ लोकसीमा के अनुरोध से अन्य के धर्म का अन्यत्र आरोप किया जाता है, वहाँ समाधि गुण होता है।" आचार्य वामन के अनुसार, "जहाँ आरोह- अवरोह हो वहाँ समाधि गुण होता है।" उदाहरणार्थ —

"हो रहे झर कर दृगों से
अग्नि-कण भी क्षार शीतल
पिघलते उर से निकल
निःश्वास बनते धूप श्यामल
एक ज्वाला के बिना मैं राख का घर हूँ।"
— (महादेवी वर्मा)